इकाई 3 पाठ्यक्रम के राग एवं ताल

सूची पत्र

3.0 भूमिका
3.1 पाठ का उद्देश्य
3.2 राग अल्हैया बिलावल
3.2.1 अल्हैया बिलावल की विशेषताएं
3.2.2 राग विवरण
3.2.3 याद रखने योग्य बातें
3.3 राग भूपाली
3.3.1 भूपाली की विशेषताएं
3.3.2 राग विवरण
3.3.3 याद रखने योग्य बातें
3.4 राग देश
3.4.1 राग देश की विशेषताएं
3.4.2 राग विवरण
3.4.3 याद रखने योग्य बातें
3.5 रूपक ताल
3.5.1 याद रखने योग्य बातें
3.6 एकताल
3.6.1 याद रखने योग्य बातें
3.7 तिलवाड़ा ताल
3.7.1 याद रखने योग्य बातें
3.8 सारांश
3.9 स्व मूल्यांकन प्रश्न

3.0 भूमिका

प्रिय शिक्षार्थियों पिछले अध्यायों में आपने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग आने वाले विभिन्न विषयों,विशिष्ट शब्दों तथा उनकी परिभाषाओंएवं कुछ इतिहास के बारे में जाना है।जिस प्रकार आप लोगों ने पिछले सत्र में पाठ्यक्रम में निहित राग भैरव, राग यमन एवं राग वृंदावनी सारंग के बारे में तथा तीन ताल, दादरा ताल एवं कहरवा ताल के बारे में पढ़ा एवं जाना। इस इकाई में आप इस सत्र के पाठ्यक्रम में निहित राग अल्हैया बिलावल, राग भूपाली एवं राग देश के बारे में तथा रूपक ताल, एकताल और तिलवाड़ा ताल के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

3.1 पाठ का उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद शिक्षार्थी

- हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में निहित राग अल्हैया बिलावल, राग भूपाली एवं राग देश के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे।
- इन सभी रागों के लिखित स्वरवालियों से राग को पहचान सकेंगे।
- इन रागों को गाए या बजाए जाने पर पहचान पाएंगे।
- इन सभी रागों के विशिष्टताओं को अपने शब्दों में बता पाएंगे।
- हिंदुस्तानी संगीत में प्रयोग आने वाली रूपक ताल, एकतालएवं तिलवाड़ा ताल के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।
- सभी तालों को लिपिबद्ध कर पाएंगे।
- सभी तालों बोलों के साथ हाथ पर प्रदर्शित कर पाएंगे।

3.2 राग अल्हैया बिलावल

मृदु मध्यम सब तीख सुर, मध्यम से ना चढ़ैया।
कहुँ निषाद कोमल लगत, धग संवाद अल्हैया।।

-राग चंद्रिकासार

अल्हैया बिलावल राग को बिलावल थाट से उत्पन्न माना गया है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है यह बिलावल का ही एक प्रकार है। राग बिलावल के अवरोह में दो धैवतों के बीच कोमल निषाद के प्रयोग से इस राग की रचना हुई है। इसके आरोह में मध्यम वर्जित और अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किए जाते है इसलिए इसकी जाति षाड़व संपूर्ण है। इसका वादी स्वर धैवत और संवादी गंधार है तथा इसका गायन समय दिन का दूसरा प्रहर है। राग अल्हैया बिलावल का इतना अधिक प्रचार है कि सामान्यतः बिलावल सेअल्हैया बिलावल का ही बोध होता है।

3.2.1 अल्हैया बिलावल की विशेषताएं

1. इस राग के आरोह में ऋषभ और अवरोह में गंधार का अधिकतर वक्र प्रयोग किया जाता है जैसे आरोह में 'ग रे ग प' और अवरोह में 'म ग म रे'।
2. इस राग के आरोह मेंशुद्ध निषाद का प्रयोग और केवल अवरोह में दो धैवतों के बीच कोमल निषाद का अल्प प्रयोग किया जाता है जैसे सां नि ध प ध नि ध प।
3. इसी तरह इसमें अवरोह में गंधार भी वक्र रूप से लेते हैं जैसे - ध नि ध प, ध ग प, म ग म रे सा।
4. यह राग उतरांग प्रधान है अर्थात इसका वादी स्वर सप्तक के उत्तरांग (म प ध नि सां) से लिया गया है। इस का चलन भी सप्तक के इसी अंग तथा तार सप्तक में ज्यादा होता है।
5. राग बिलावल और अल्हैया बिलावल यह दो अलग-अलग राग है। इस राग के न्यास के स्वर सा रे और पा है।

6. इस राग का वादी स्वर धैवत है परन्तु धैवत पर न्यास नहीं किया जाता। इस राग में धैवत-गंधार संगति महत्वपूर्ण है और इसे मींड में लिया जाता है।
7. इस राग में ख्याल, तराने, ध्रुपद, टप्पा आदि सभी विधायें गाये जाते हैं।

3.2.2 राग विवरण

थाट - बिलावल

जाति - षाड़व-सम्पूर्ण

वादी संवादी - धैवत एवं गंधार

वर्ज्य स्वर - आरोह में म

विकृत स्वर - अवरोह में कोमल निवक्र गति से

समय - दिन का दूसरा प्रहर

समप्राकृतिक राग - बिलावल

आरोह - सा, ग रे ग प, ध नि सां।

अवरोह - सां नि ध प, घ नि ध प, म ग म रे सा।

पकड़ - म ग म रे, ग प ध नि ध प, म ग म रे, सा

यह स्वर संगतियाँ राग अल्हैया बिलावल का रूप दर्शाती हैं -

सा रे ग, ग रे ग प, म ग म रे, सा, रे ग रे ग प म ग म रे, ग प, ध प ग म रे, ग प ध ग म रे, सा, ग प ध नि ध प, ध नि सां नि ध प, ध नि ध प, सां नि ध प, ध नि ध प, ध प म ग म रे सा।

3.2.3 याद रखने योग्य बातें

1. यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न माना गया है तथा यह बिलावल का एक प्रकार है। राग बिलावल एवं अल्हैया बिलावल दो अलग-अलग राग है।
2. इस राग के आरोह में ऋषभ और अवरोह में गंधार अधिकतर वक्र रूप से प्रयोग किए जाते हैं शुद्ध निषाद का प्रयोग आरोह में और कोमल निषाद का अल्प प्रयोग केवल अवरोह में दो धैवतों के बीच वक्र रूप से किया जाता है।
3. यह एक उत्तरांग प्रधान राग है तथा इसका चलन मध्य एवं तार सप्तक में अधिक होता है।
4. इस राग की जाति षाड़व-संपूर्ण है तथा इसका वादी और संवादी स्वर धैवत एवं गंधार है।

3.3 राग भूपाली

आरोही अवरोही में सुर, मनि किन्हे त्याग।
गध वादी संवादी तें, कहत भूपाली राग।।

-राग चंद्रिकासार

भूपाली राग एक अत्यंत लोकप्रिय एवं प्राचीन राग है। इस राग की रचना कल्याण थाट से मानी गई है तथा इसमें सभी स्वर शुद्ध लगते है। राग भूपाली में मध्यम और निषाद स्वर वर्जित है इसलिए इसकी जाति औड़व औड़व है। इसका वादी स्वर गंधार और संवादी स्वर धैवत है।

रात्रि का प्रथम प्रहर इसके गायन एवं वादन का उचित समय है।

यह राग भूप के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह चंद्र प्रकाश के समान शांत तथा स्निग्ध वातावरण पैदा करने वाला मधुर राग है। जिसका प्रभाव वातावरण में बहुत ही जल्दी घुल जाता है। रात्रि के रागों में राग भूपाली सौम्य राग है। शांत रस प्रधान होने के कारण इसके गायन से वातावरण गंभीर व उदात्त बन जाता है।

इस राग को गाते समय न्यासस्वरों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यदि इस राग में धैवत पर अधिक जोर दिया जाता है तो राग का स्वरूप बदल जाता है और यह देशकार राग हो जाता है। इसी तरह षडज से धैवत और पंचम से गंधार स्वरों की मींड लेते समय यदि क्रमशः निषाद और मध्यम स्वरों का स्पर्श होजाए या कण लग जाए तो भी भूपाली राग का स्वरूप बदल जाता है और यह राग शुद्ध कल्याण दिखने लगता है। अतः भूपाली को इन रागों से बचाते हुए गाना चाहिए। राग भूपाली में गंधार-धैवत संगति का एक विशेष महत्त्व है।

3.3.1 राग भूपाली की विशेषताएं

1. इसके थाट के विषय में कुछ मतभेद है कुछ लोग इसे बिलावल थाट का मानते है। चूंकि इस राग में सभी स्वर शुद्ध लगते है और मध्यम स्वर वर्जित है।
2. कल्याण थाट को मानने वाले गुणीजन कहते हैं कि मध्यम के वर्जित होने के कारण इसे बिलावल थाट का नहीं कह सकते क्योंकि मध्यम के अतिरिक्त कल्याण में भी सभी स्वर शुद्ध लगते है इसलिए कल्याण थाट ही उचित जान पड़ता है। ।
3. इस राग के निकट का राग देशकार है जिससे इसे सदैव बचना चाहिए। देशकार तथा भूपाली में केवल वादी संवादी स्वरों का अंतर है अन्यथा दोनों रागों के स्वर समान है।
4. भूपाली राग पूर्वांग प्रधान राग है अर्थात इसका चलन अधिकतर मंद्र और मध्य सप्तक में होता है। उत्तरांग की प्रधानता होने पर राग देशकार का आभास होता है।
5. इस राग में ध्रुपद, बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल और तराना गाया जाता है। सुगम संगीत में इस राग का बहुत अधिक प्रयोग किया जाता है ।
6. कुछ पुराने संगीतज्ञ इस राग में 'प रे'की संगति करते है।
7. दक्षिण भारतीय संगीत में इस राग को मोहनम् राग कहते है। इस राग के न्यास के स्वर षड़ज, पंचम एवं ऋषभ है। इसका प्रारंभ प्रायः मध्य सा से होता है।

3.3.2 राग विवरण

थाट - कल्याण

वर्जित स्वर - मध्यम एवं निषाद

जाति - औडव-औडव

स्वरों का रूप- सब स्वर शुद्ध

वादी - ग

संवादी - ध

गायन समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

आरोह- सारेगपधसां

अवरोह- सांधपगरेसा

पकड़ -सारेगरेग,पग,धपगरे, सारेध़ध़सा

3.3.3 याद रखने योग्य बातें

1. राग भूपाली कल्याण थाट से उत्पन्न माना गया है तथा इसमें सभी स्वर शुद्ध लगते है।
2. इसकी जाति औड़व औड़व है। इसका वादी एवं संवादी स्वर गंधार एवं धैवत है तथा इसमें मध्यम एवं निषाद स्वर वर्जित है।
3. यह राग भूप के नाम से भी प्रसिद्ध है । इसका गायन एवं वादन समय रात्रि का प्रथम प्रहरहै।
4. इस राग में स्वरों के न्यास पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि इसके मिलते जुलते राग देशकार में भी समान स्वर है। केवल वादी एवं संवादी स्वरों का अंतर ही इन दोनों रागों को अलग करता है।
5. भूपाली एक पूर्वांग प्रधान राग है तथा इसका चलन मन्द्र एवं मध्य सप्तक में होता है। देशकार उत्तरांग प्रधान राग है तथा उसका चलन मध्य एवं तार सप्तक में अधिक होता है।
6. दक्षिण भारत में इस राग को मोहनम राग कहते हैं।

3.4 राग देश

पंचम वादि अरू रिखब संवादि संजोग।
सोरठ केहि सुरन तें, देस कहत है लोग।।

-राग चंद्रिकासार

राग देश की उत्पत्ति खमाज थाट से मानी गई है। यह चंचल प्रकृति का लोकप्रिय एवं प्राचीन राग है। इसमें दोनों निषादों का प्रयोग होता है। इसके आरोह में गंधार और धैवत स्वर वर्जित होता है तथा अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किए जाते है। इस राग में वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर पंचम है। इसका गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। यह बहुत ही मधुर राग है तथा इसमें षड्ज-मध्यम और षड्ज-पंचम भाव होने से यह बहुत ही कर्णप्रिय लगता है। इसी कारण इस राग में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, मसीतखानी गत, रजाखानी गत, ठुमरी, टप्पा, तराना, होरी, लोकगीत, भजन, गजलें, सुगम संगीत तथा उप शास्त्रीय संगीत सभी कुछ सुनने को मिलता है। इस राग के अंगों में ऋषभ तथा पंचम का कभी-कभी वक्र प्रयोग भी होता है।

3.4.1 राग देश की विशेषताएं

1. इस राग के संवादी स्वर के विषय में कुछ मतभेद भी हैं कुछ लोग पंचम वादी तथा रे संवादी मानते हैं जोकि बहुत तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता है। क्योंकि इस राग का गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है और इसका संपूर्ण चलन प्रायः पूर्वांग में ही होता है, अतः रे पा का संवाद ही अधिक न्याय संगत प्रतीत होता है।
2. इस राग का प्रारंभ मध्य षड़ज तथा मन्द्र निषाद दोनों से ही होता है। इस राग के न्यास के स्वर 'सा, रे और पा है।

3. इसके मिलते जुलते रागों में राग सोरठ और तिलक कामोद का नाम आता है। राग देस सोरठ राग के बहुत समीप है। राग देस में गंधार स्वर बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई देता है जबकि सोरठ राग में गंधार स्वर ढ़का हुआ सा लगता है।
4. इस राग में रंजकता बढ़ाने के लिए कभी-कभी विवादी स्वर के रूप में कोमल गंधार भी प्रयोग कर लिया जाता है।
5. इसके आरोह में शुद्ध और अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। इस राग के विवरण के अंतर्गत यह बताया जाता है कि इसके आरोह में गा और धा स्वर वर्जित है किंतु राग की सुंदरता के लिए कभी-कभी इस नियम का उल्लंघन किया जाता है अर्थात आरोह में भी उन्हें प्रयोग कर लेते है। आरोह में ग धा प्रयोग करते समय मींड़ व द्रुत स्वरों का प्रयोग करते है।
6. इसके अवरोह में अधिकतर ऋषभ स्वर वक्र प्रयोग किया जाता है जैसे म ग रे ग - ऩि सा।
7. इस राग में ध मा स्वरों की संगति बार-बार दिखाई जाती है इसलिए अवरोह में पंचम को अल्प कर ध मा प्रयोग किया जा सकता है।

3.4.2 राग देश का विवरण

थाट - खमाज

वर्जित स्वर - आरोह में गंधार और धैवत

प्रयुक्त स्वर - सभी स्वरों का प्रयोग

स्वरों का रूप - सभी स्वर शुद्ध (आरोह में शुद्ध तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग)

जाति - औड़व-संपूर्ण

वादी संवादी - ऋप्रभ एवं पंचम

गायन समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह- ऩि सा रे म प नी सां

अवरोह- सां<u>नि</u> ध प मग रे सा

पकड़- ऩि सा रे म प, <u>नि</u>ध प म ग रे, म गरे,ग ऩि सा

3.4.3 याद रखने योग्य बातें

1. राग देश की उत्पत्ति खमाज थाट से मानी गई है।।
2. देश राग केआरोह में गंधार एवं धैवत स्वर वर्जित है; अतः आरोह में पांच तथा अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किए जाता है। अतः इसकी जाति औड़व-संपूर्ण है।
3. इसके आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है।
4. इसका गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है तथा इसके वादि एवं संवादी स्वर ऋषभ एवं पंचम है।
5. इस राग का प्रारंभ मध्य षड़ज एवं मन्द्र निषाद दोनों से होता है तथा इसके न्यास के स्वर सा, रे और प है।
6. इस के मिलते जुलते रागों में राग सोरठ तथा राग तिलक कामोद का नाम आता है। मुख्य अंतर यह है कि राग देश में गंधार स्पष्ट दिखाई देता है जबकि सोरठ में गंधार छुपा हुआ लगता है।

3.5 रूपक ताल

लोकप्रिय तालों में से एक 'रूपक ताल' को तबले पर बजाया जाता है। इसका प्रयोग शास्त्रीय और उपशास्त्रीय दोनों ही प्रकार की रचनाओं में समान रूप से होता है। विगत कुछ वर्षों में इस ताल में विलंबित ख्याल का गायन भी होने लगा है।

इस ताल में 7 (सात) मात्राएं होती हैं और इसके तीन विभाग होते है। प्रथम विभाग तीन मात्रा का होता है और शेष दो विभाग दो-दो मात्राओं के होते है। कुछ लोग इस ताल में प्रथम विभाग पर भी ताली का प्रयोग मानते है और इस कारण इसमें तीनों विभाग पर ताली पड़ती है। कुछ अन्य गुणीजन इस ताल की पहली मात्रा पर खाली का प्रयोग मानते हैं एवं चौथी एवं छठवीं मात्रा पर ताली का प्रयोग मानते है। इस तरह उन्हें इस ताल का सम पहचानने और उसकी पुनरावृति करने में सुविधा होती है। अगर हम तीनों खंडों में ताली का प्रयोग करेंगे तो हमें इस साल के सम को देखने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। अतः इस ताल में प्रथम मात्रा पर खाली दिखाना उचित जान पड़ता है।

आजकल यह ताल बहुत प्रचार में है। मध्य लय के ख्याल तथा वाद्य वादन में निहित गतों की संगति में इस ताल का प्रयोग होता है। कुछ वादक इस ताल में स्वतंत्र तबला वादन भी प्रस्तुत करते हैं और पेशकार,कायदे,रेले,टुकड़े,मुखड़े तथा गतें जैसी रचनाएं इसमें बजाते है। आजकल भाव संगीत,उपशास्त्रीय संगीत,गजलों और भजनों में भी इस ताल का प्रयोग किया जाता है। इस ताल का वादन अति द्रुत लय में ठीक नहीं माना जाता है। पखावज में तीव्रा ताल तथा कर्नाटक संगीत में मिश्र जाति का त्रिपुट ताल इसके सदृश्य माने जाते है।

तबले पर इसका ठेका इस प्रकार है -

1	2	3	4	5	6	7
ति	ति	ना	धिं	ना	धिं	ना
०			×		×	

3.5.1 याद रखने योग्य बातें

1. रूपक ताल में सात मात्राएं होती हैं और इसके तीन विभाग होते है।
2. पहला विभाग तीन मात्रा का तथा शेष दो विभाग दो दो मात्राओं के होते है।
3. इसके प्रथम विभाग में खाली दिखाया जाता है और अन्य दो विभागों पर ताली दी जाती है।
4. पखावज में तीव्रा ताल तथा कर्नाटक संगीत में मिश्र जाति का त्रिपुट ताल इसके सदृश्य माने जाते है।

3.6 एकताल

शास्त्रीय संगीत की पद्धति में सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रचलित तालों में से एक ताल ''एकताल'' है। यह तबले का ताल है और इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह ताल अति विलंबित लय से द्रुत लय तक पूरी सफलता के साथ बजाया जा सकता है।संगीत रत्नाकर में एकताली नामक जो ताल है वह एक द्रुत मात्रिक तथा एक तालाघात में होने से सार्थक है। प्राचीन ग्रंथों में एकताल के लिए चन्दक,विजयानन्द तथा मंच ताल आदि कई नाम दिए गए है।

ख्याल गायन शैली में विलंबित लय में इसका बहुत प्रचार तथा प्रसार है। सभी शास्त्रीय ख्याल गायक अपना गायन विलंबित एक ताल में ही शुरू करते है और इसी कारण यह ताल शास्त्रीय संगीत में एक अहम स्थान रखती है। गायक इस ताल में बड़ा ख्याल, मध्य एवं छोटा ख्याल एवं द्रुत में तराना आदि का गायन मुख्य रूप से करते है। इसके द्रुत लय में आ जाने पर कभी कभी तिरकिट के स्थान पर तक बजने लगता है। तबले पर मुक्त अथवा एकल वादन आदि के लिए भी इसका मुख्य रूप से प्रयोग किया जाता है। विलंबित, मध्य और द्रुत गतों की संगति भी इस ताल में मुख्य रूप से होती है।

यह ताल एक कर्णप्रिय एवं मधुर ताल है तथा इसमें नाना प्रकार की रचनाएं मिलती है। इस के नामकरण के विषय में कोई तार्किक और संतोषजनक व्याख्या नहीं मिलती है। कुछ लोगों के मतानुसार प्राचीन काल में इसमें सिर्फ 4 मात्राएं थी और एक ताली थी।इस ताल को तीन विभिन्न छंदों में (चतुर्मात्रिक, त्रिमात्रिक तथा द्विमात्रिक) प्रयोग करने की परंपरा है।

आधुनिक समय में इस ताल में 12(बारह) मात्राएं होती हैं और इसके छह विभाग होते है। इसके विभाग दो-दो में बंटे होते है। इसमें चार जगह ताली दी जाती है और 2 विभागों में खाली दर्शाया जाता है।

तबले पर इसका ठेका निम्न प्रकार दर्शाया जाता है –

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	कत्	ता	धागे	तिरकिट	धिं	ना
×		0		2		0		3		4	

3.6.1 याद रखने योग्य बातें

1. इस ताल में 12 (बारह) मात्राएं होती हैं और इसके छह विभाग होते है। इसके विभाग दो-दो में बंटे होते है।
2. इस ताल चार जगह ताली दी जाती है और 2 विभागों में खाली दर्शाया जाता है।
3. प्राचीन ग्रंथों में एकताल के लिए चन्दक, विजयानन्द तथा मंच ताल आदि कई नाम दिए गए है।

3.7 तिलवाड़ा ताल

तिलवाड़ा ताल तीन ताल की ही भांति एक ताल होती है। यह मुख्य रूप से तीन ताल का ही विलंबित स्वरूप है। सोलह मात्रा में निहित विलंबित ख्याल गायन की संगति इसी ताल द्वारा की जाती है। यही कारण है कि इस ताल की मात्रा अवधि 32 और 64 मात्राओं तक बढ़ाई जा सकती है। क्योंकि यह ताल तीन ताल की ही भांति वर्णित है अतः कुछ विद्वान इसे धीमा त्रिताल के नाम से भी संबोधित करते है।

इसमें भी तीन ताल की ही भांति तीन जगह ताली दी जाती है और एक जगह खाली छोड़ी जाती है। इसमें भी पहली मात्रा पर, पांचवी मात्रा पर और तेरहवीं मात्रा पर ताली दी जाती है और नवमी मात्रा पर खाली का चिन्ह दर्शाया जाता है। यदा-कदा कोई बुजुर्ग तबला वादक इस ताल में स्वतंत्र वादन भी प्रस्तुत करते है और इसमें छोटे छोटे मोहरे और मुखड़े आदि बजाते है। यह ताल तीन ताल की अपेक्षा थोड़ा गंभीर होता है

इसमें भी 16 (सोलह) मात्राएं होती है तथा इसके चार विभाग होते है। प्रत्येक विभाग में चार-चार मात्राएं होती है।

तबले पर इसका ठेका निम्न प्रकार दर्शाया जाता है

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	तिरकिट	धीं	धीं	धा	धा	तिं	तिं	ता	तिरकिट	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं
x				2				0				3			

3.7.1 याद रखने योग्य बातें

1. तिलवाड़ा ताल तीन ताल का ही विलंबित स्वरूप है तथा कुछ विद्वान ऐसे धीमा त्रिताल भी कहते है।
2. इस ताल में 16 मात्राएं होती है और इसके चार विभाग होते है जिसमें प्रत्येक विभाग में चार-चार मात्राएं होती है।
3. इस ताल में भी पहली मात्रा पांचवी मात्रा और तेरहवीं मात्रा पर ताली दी जाती है और नवमी मात्रा पर खाली का चिन्ह दर्शाया जाता है।

3.8 सारांश

प्रिय शिक्षार्थियों, इस इकाई में आपने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में निहित राग अल्हैया बिलावल, राग भूपाली एवं राग देश के बारे में तथा रूपक ताल, एकताल और तिलवाड़ा ताल के बारे में सीखा और समझा है।आप अगली इकाइयों में कुछअन्य रागों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे और उनका अध्ययन करेंगे।

प्रिय शिक्षार्थियों, आप इन इकाइयों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के रागों के बारे में संक्षिप्त रूप से अध्ययन कर रहे हैं। किंतु आपको रागों के बारे में गहराई से अध्ययन करने की आवश्यकता

भी है, तभी आपको रागों के सही स्वरूप और उनके विस्तार के बारे में जानकारी प्राप्त हो पाएगी। रागों की जानकारी सिर्फ किताबों तक ही निर्भर नहीं है किताबों से आगे जाकर रागों के बारे में गहराई से अध्ययन करने के लिए आपको किसी गुरु की आवश्यकता भी होगी। अतः आप अपने ज्ञान को सीमित ना रखते हुए रागों के बारे में जानने वाली असीम संभावनाओं की तलाश करें तथा उनके बारे में सही प्रकार से जानें। किंतु यह भी सच है कि इन इकाइयों में रागों के बारे में आप जितना भी जान रहे हैं वह आपके ज्ञान वर्धन के प्रथम भाग में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।मुझे आशा है कि आप रागों एवं तालों के बारे में तथा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के बारे में गहराई से अध्ययन कर अपने ज्ञान को बढ़ाएंगे।

3.9 स्व मूल्यांकन प्रश्न

देशकार न्यास, निषाद षड़ज ऋषभ पंचम, सोरठ, खमाज गंधार एवं धैवत, दिन का दूसरा प्रहरबिलावल, तीव्रा त्रिपुट, उत्तरांग मध्य उवं तार, षाड़व-संपूर्ण धैवत एवं गंधार, मोहनम राग, कल्याण औड़व-औड़व, बारह दो दो, तीन ताल सौलह, चंदक विजयानंद, गंधार एवं धैवत तथा मध्यम एवं निषाद, ऋषभ और पंचम रात्रि का दूसरा पहर, शुद्ध निषाद कोमल निषाद, सात तीन,

1. राग अल्हैया बिलावल के गायन का समय .... है तथा इसका सम प्रकृति राग .... है।
2. राग देश के वादी और संवादी स्वर .... हैं तथा इसके गायन एवं वादन का समय .... है।
3. अल्हैया बिलावल की जाति .... है तथा इसके वादि और संवादी स्वर .... है।
4. तिलवाड़ा ताल .... ताल का ही विलंबित स्वरूप है तथा इस ताल में .... मात्राएं होती है।
5. राग भूपाली के वादी एवं संवादी स्वर .... हैं तथा इसमें .... स्वर वर्जित है।
6. राग देश का समप्रकृति राग .... है।
7. अल्हैया बिलावल राग .... प्रधान है तथा इसका विस्तार .... सप्तक में अधिकता से किया जाता है।
8. पखावज मं‍े .... ताल तथा कर्नाटक संगीत में मिश्र जाति का .... ताल इसके सदृश्य माने जाते है।
9. राग भूपाली को दक्षिण भारत में .... से जानते है।
10. राग देश का प्रारंभ मन्द्र .... से होता है तथा इसके न्यास के स्वर .... है।
11. राग देश के आरोह में .... तथा अवरोह में .... स्वर का प्रयोग होता है।
12. रूपक ताल में .... मात्राएं होती हैं तथा इसके .... विभाग होते हैं।

13. राग भूपाली का समप्रकृति राग .... है। केवल .... स्वरों का अंतर ही इन दोनों रागों को अलग करता है।

14. एक ताल में .... मात्राएं होती हैं तथा इसके विभाग .... में बंटे होते है।

15. राग भूपाली का थाट .... है तथा इसकी जाति .... है।

16. प्राचीन ग्रंथों में एक ताल के लिए .... नाम दिए गए हैं

17. राग देश का थाट .... है तथा इसके आरोप में .... स्वर वर्जित है।

संक्षिप्त वर्णनप्रश्न

प्रश्न 1 - राग देश का संक्षिप्त वर्णन कर इसकी पांच विशेषताओं के बारे में बताइए?

प्रश्न 2 - एकताल के बारे में संक्षिप्त विवरण कर तबले पर इसके ठेके को दर्शाइये?

उत्तर 1 - राग देशएक चंचल प्रकृति का लोकप्रिय एवं प्राचीन राग हैतथा इसकी उत्पत्ति खमाज थाट से मानी गई है। इसके आरोह में गंधार और ध्यावत स्वर वर्जित होता है तथा अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किए जाते है। इस राग में वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर पंचम है। इसका गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहरहै। यह बहुत ही मधुर राग है इसी कारण इस राग में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, मसीतखानी गत, रजाखानी गत, ठुमरी, टप्पा, तराना, होरी, लोकगीत, भजन, गजलें, सुगम संगीत तथा उप शास्त्रीय संगीत सभी कुछ सुनने को मिलता है।

राग देश की विशेषताएं

1. इस राग का प्रारंभ मध्य षड़ज तथा मन्द्र निषाद दोनों से ही होता है। इस राग के न्यास के स्वर 'सा, रे और पा है।
2. इसके आरोह में शुद्ध और अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। इस राग के विवरण के अंतर्गत यह बताया जाता है कि इसके आरोह में गा और धा स्वर वर्जित है किंतु राग की सुंदरता के लिए कभी-कभी इस नियम का उल्लंघन किया जाता है अर्थात आरोह में भी उन्हें प्रयोग कर लेते है। आरोह में ग धा प्रयोग करते समय मींड़ व द्रुत स्वरों का प्रयोग करते है।
3. इसके मिलते जुलते रागों में राग सोरठ और तिलक कामोद का नाम आता है। राग देस सोरठ राग के बहुत समीप है। राग देस में गंधार स्वर बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई देता है जबकि सोरठ राग में गंधार स्वर ढ़का हुआ सा लगता है।
4. इस राग में रंजकता बढ़ाने के लिए कभी-कभी विवादी स्वर के रूप में कोमल गंधार भी प्रयोग कर लिया जाता है।
5. इस राग में ध मा स्वरों की संगति बार-बार दिखाई जाती है इसलिए अवरोह में पंचम को अल्प कर ध मा प्रयोग किया जा सकता है।

उत्तर 2 –शास्त्रीय संगीत की सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रचलित तालों में से एक ताल ''एकताल'' है। यह तबले का ताल है और इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह ताल अति विलंबित लय से अति द्रुत लय तक पूरी सफलता के साथ बजाया जा सकता है।ख्याल गायन शैली में विलंबित लय में इसका बहुत प्रचार तथा प्रसार है। सभी शास्त्रीय ख्याल गायक अपना गायन विलंबित एक ताल में ही शुरू करते है और इसी कारण यह ताल शास्त्रीय संगीत में एक अहम स्थान रखती है।तबले पर मुक्त अथवा एकल वादन आदि के लिए भी इसका मुख्य रूप से प्रयोग किया जाता है। विलंबित, मध्य और द्रुत गतों की संगति भी इस ताल में मुख्य रूप से होती है।

प्राचीन ग्रंथों में एकताल के लिए चन्दक, विजयानन्द तथा मंच ताल आदि कई नाम दिए गए है।आधुनिक समय में इस ताल में 12(बारह) मात्राएं होती हैं और इसके छह विभाग होते है। इसके विभाग दो-दो में बंटे होते है। इसमें चार जगह ताली दी जाती है और 2 विभागों में खाली दर्शाया जाता है।

तबले पर इसका ठेका निम्न प्रकार दर्शाया जाता है –

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	कत्	ता	धागे	तिरकिट	धिं	ना
×		0		2		0		3		4	